राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 125
फन
नागराज
दो टैटू स्टीकर मुफ्त

जहरीली हो उठेंगी हवाएं! हवा में उड़ने वाले पक्षी जमीन की शरण ढूंढ़ने लगेंगे। कुदरत तक को वश में कर लेने का सपना देखने वाले इन्सान जमीन पर रेंगने लगेंगे।... और ऐसा तब होगा, जब पूरे महानगर पर फैलेगा...

कथा: जॉली सिन्हा, चित्र: अनुपम सिन्हा, इंकिंग: विट्ठल कांबले, सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय, सम्पादक: मनीष गुप्ता

ओह! फन के आकार का यह जहरीला बादल तो अपना आकार बढ़ाकर पूरे महानगर को अपने आगोश में ले रहा है! करोड़ों जिन्दगियां खतरे में हैं। और मेरे पास इस विपत्ति को रोक पाने का एक भी तरीका नहीं है!

TOURIST VEHICLE

DELUX

★इस संबंध में जानने के लिए पढ़ें: विसर्पी की शादी और शाकूरा का चक्रव्यूह।

अगर नागराज यहां पर आकर मेरे साथ नहीं रह सकता, तो मुझे ही उसके पास जाकर रहना होगा!... और ऐसा करने के लिए मुझे अपना पद त्याग करना होगा!...
... इसीलिए मैं नागद्वीप के शासक के पद का त्याग कर रही हूं!
यह तुम क्या कह रही हो, कुमारी विसर्पी? जानती हो इस निर्णय से कितनी समस्याएं उत्पन्न हो जाएंगी?
उन समस्याओं से निपटने के लिए आपतो मौजूद रहेंगे ही महात्मन! आखिरकार यह नागद्वीप तो आपका ही बनाया हुआ है न?
अवश्य है...
... परन्तु अधिकतर समय समाधि में लीन रहने के कारण मैं राजा के दायित्वों का निर्वाह नहीं कर सकता था! इसीलिए मैंने एक योग्य नाग यानी तुम्हारे ही पूर्वज को राजा बनाया था! और इतनी शताब्दियों तक तुम्हारे वंश ने अपने दायित्वों को बखूबी निभाया है!
नागद्वीप की जनता भी तुम्हारे वंश को ही राजा का वंश मानती है। अब अगर तुमने राजगद्दी छोड़ी तो इस पद के न जाने कितने दावेदार पैदा हो जाएंगे! लंगारा, चर्कत, घन्नाट और ऐसी ही अनेक नागद्वीप की प्रजातियां इस पद को प्राप्त करने के लिए आपस में लड़ मरेंगी। नागद्वीप में खून के अनगिनत तालाब बन जाएंगे!
और अगर इनमें से एक भी राजगद्दी को प्राप्त करने में सफल हो गया तो, उसके राजा बनने के कारण मैं भी उसका आदेश मानने को बाध्य हो जाऊंगा!
चाहे उस नाग का आदेश सही हो या गलत!

कहते हैं कि जब प्रेमियों में किसी एक का भी दिल तड़पकर पुकारता है तो दूसरा दिल भी उसे जरूर सुन लेता है–

आज विसर्पी की याद बहुत सता रही है! नागद्वीप में न जाने का प्रतिबंध जो मुझ पर लगा था, वह भी विषाला द्वारा चुराए गए स्फटिक को मेरे द्वारा वापस नागद्वीप पहुंचा दिए जाने के कारण समाप्त कर दिया गया है। परन्तु फिर भी वहां जाकर उससे मिलने का कोई फायदा नहीं होगा। क्योंकि न तो मैं महानगर छोड़कर उसके पास महाद्वीप में रह सकता हूं...★

मेरा काम अपराध और आतंकवाद को नष्ट करना है भारती! और आज शायद अपराधी और आतंकवादी भी छुट्टी मना रहे हैं। इसलिए मेरा दिल भी नहीं लग रहा है!

जानते हो तुम्हारी मुख्य समस्या क्या है नागराज! वह है अकेलापन! जिसको दूर करने के लिए तुम राज का रूप रखके मानव समाज में रह रहे हो! परन्तु फिर भी वह अकेलापन वहीं का वहीं है।...

★स्फटिक के विषय में जानने के लिए पढ़ें-प्रलय

... जानते हो इसका कारण क्या है? इसका कारण एक ऐसे दोस्त की कमी है जिसके सामने तुम अपने दिल की सारी बातें कह सको। और ऐसा साथी सिर्फ जीवन साथी ही हो सकता है!

तुमको एक जीवन संगिनी की जरूरत है नागराज!

जीवन संगिनी यानी पत्नी! ओह, कम ऑन भारती! मुझ जैसे जहरीले इन्सान की पत्नी बनना कौन पसन्द करेगी?

नागराज बात को मजाक में उड़ाने की कोशिश कर रहा था–

लेकिन भारती मजाक नहीं कर रही थी–

तुम अपने-आपको नहीं जानते हो नागराज! तुमको पाने के लिए तो कोई ऐसी तपस्या कर सकता है, जैसी पार्वतीजी ने शिवजी को पाने के लिए की थी!

लेकिन... भारती मैं...

तुम मेरी बात से शायद दुविधा में पड़ गए हो नागराज! लेकिन यह सच है! मैं पार्वती की तरह जीवन भर तुमको पाने के लिए तपस्या करती रहूंगी। चाहे तुम मेरी पुकार सुनो या नहीं!

ओह! भारती की तरफ से मैंने ऐसे प्रस्ताव की आशा नहीं की थी। मैं इसका दिल तोड़ भी नहीं सकता। और इसको विसर्पी के बारे में बता भी नहीं सकता! क्योंकि...

नागराज, नागरस्सी पर लहरा गया–

जहां पर, महानगर एक विचित्र मुसीबत से जूझ रहा था-
पृथ्वी पर राज तो सरीसृपों का ही होना चाहिए, जैसे करोड़ों साल पहले था! हम बुद्धि में कम ही सही, पर ताकत में तुमसे ज्यादा हैं, और तुम्हारी तरह प्रकृति के साथ खिलवाड़ भी नहीं करते!
ही ही ही स्सस! बड़ा मजा आ रहा है, तुम मानवों को भय से भागते हुए देखकर! मुझे आश्चर्य तो यह हो रहा है कि तुम जैसे कमजोर प्राणी पृथ्वी पर राज कैसे कर रहे हैं!
फिलहाल तो तू महानगर की सम्पत्ति के साथ खिलवाड़ कर रहा है! और रही शक्ति की बात!...
...तो लड़ाईयां बुद्धि से जीती जाती हैं, ताकत से नहीं!
बुद्धि! हीही हिस्स!
वही, जिससे तुमने यह हथियार बनाया है?
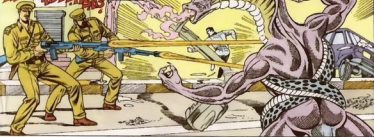
इसे भी चलाकर अपनी हसरत पूरी करले!...
... वैसे तेरी गोलियां तो क्या, मेरी मोटी शल्कों से ढकी खाल पर तेरे... क्या कहते हैं हां, बम तक असर नहीं करेंगे!
तड़ तड़ तड़तड़ तड़तड़
लेकिन मेरी पूंछ तेरी खोपड़ी की हड्डी चटका देगी!...
... और फिर देख मेरी 'जहर लहर' का कमाल! जो तुझे इस लोक से ऐसे रवाना कर देगी कि तुझे पता भी नहीं चलेगा कि तू कब परलोक पहुंच गया!
'जहर लहर' आगे बढ़ी तो थी इंस्पेक्टर को खत्म करने के लिए-
लेकिन शायद इंस्पेक्टर की किस्मत अच्छी थी या उस चिड़िया की किस्मत खराब जो बीच में आ गई थी-
एक पल से भी कम समय में चिड़िया के शरीर के नाम पर सिर्फ गली हड्डियां बाकी रह गई-

'जहर लहर' एक बार फिर पुलिस वालों की तरफ लपकी-
लेकिन इस बार एक 'सुरक्षा ढाल' बीच में आ गई-
य...यह क्या?
सर्पों द्वारा बनी ढाल? सर्प ढाल! आश्चर्यजनक! और इन सर्पों को मेरी जहर लहर गला भी नहीं पा रही है!
किस प्रकार के हैं ये सांप?
ये नागराज की सर्प सेना है दुष्ट! और जिस स्तर का जहर तू उगल रहा है, ये सर्प उस स्तर के जहर में ही पलते-बढ़ते हैं!
नागराज! हलाहलकंट ने तेरे बारे में सुना है!...
...लगता है तुझे मारे बगैर इस शहर से मानवों को समाप्त करने का काम पूरा नहीं हो पाएगा!

इसीलिए मुझे तेरा जातभाई होते हुए भी तुझे मारना ही पड़ेगा।
तुम्हारी जात विनाशकों की जात है, हलाहल कंट! और नागराज उस जात में शामिल नहीं है!
... तेरे सपोलों को खाकर करता हूं।
बड़े स्वादिष्ट हैं तेरे सांप!
कचाक कचाक
फू फू
ही जाएगा! जब मैं तुझे खाकर अपने पेट में भर लूंगा तो तू वैसे ही मेरे शरीर का ही एक अंग बन जाएगा।
और इसकी शुरुआत...
मेरे सांप तेरे गले में अटक सकते हैं, हलाहल कंट! इसीलिए साथ में मेरी विष फुंकार भी पी ले...
आहा! गला सूख रहा था! तर ही गया तेरी फुंकार को पीकर! और अब मैं तेरा मिजाज तर करूंगा!
आऽऽह!
यह तो मेरी फुंकार को आराम से झेल गया! बहुत जहरीला नाग है!
पर यह आया कहां से है, और क्यों आया है?
इस सवाल का जवाब इसी से मिल सकता है। इसीलिए मुझे इसको जिन्दा पकड़ना होगा! वरना मैं अपने विषदंश को प्रयोग में लाता!
धड़ाकं

अब बता, तू कौन है, कहां से आया है, और क्यों आया है?
यह सब जानकर तू क्या करेगा, नागराज? मरने के कुछ पल पहले मिली जानकारी तेरे किस काम की? देख...
... मेरा विषदंश तुझको कुछ ही पल में मौत की सीमा से पार ले जाएगा!
हलाहलकंट के दांत नागराज की खाल में आ धंसे-
और दोनों ही चीख उठे-
हलाहलकंट के विष ने नागराज के शरीर में काटे के स्थान पर तेज पीड़ा और जलन मचा दी थी-
आऽऽऽह!
आ स्स स्स!
और नागराज के विष ने भी, हलाहलकंट के शरीर में प्रवेश करके उसमें भीषण जलन मचा दी थी-
आश्चर्य! घोर आश्चर्य! मेरा विष चखने के बाद भी हलाहलकंट का शरीर नहीं गला! यह शायद ऐसा पहला प्राणी मुझे मिला है, जो मेरा विष चखकर भी न तो मरा और न ही गला! यानी इसके अन्दर भी मेरी टक्कर का जहर है!
इसलिए मुझे अपने वारों को हल्का नहीं होने देना है। तीव्र विषफुंकार का प्रयोग करता हूं!
नागराज की तीव्र फुंकार से हलाहलकंट तक डगमगा गया-

लेकिन फिर, लगभग तुरन्त ही उसने अपने आपको संभालकर नागराज पर एक अजीबो-गरीब वार कर दिया-

मेरे दो फनों में दो अलग-अलग विष ग्रंथियां हैं नागराज! और जब इन दोनों ग्रंथियों से एक साथ दो अलग-अलग तीव्र विषों की फुहार निकलेगी तो उस मिश्रण से तू भी नहीं बच पाएगा!

विष फुहारें नागराज के शरीर की तरफ लपकीं-

उसके शरीर से टकराईं और नागराज एक बार फिर चीख उठा-
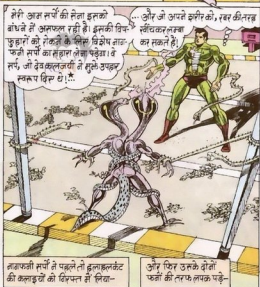
★विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: नागपाशा

एक ही पल के अन्दर नागफनी सर्पों ने हलाहलकंट के फनों को भी लपेट लिया-
अब फनों का रुख एक-दूसरे की विपरीत दिशा में था-
अब यह न तो अपनी दोनों 'विष फुहारों' को मिश्रित कर पाएगा, और नही मुझे नुकसान पहुंचा पाएगा। अब मैं इसको पीट-पीटकर इसके द्वारा किए जा रहे इस विनाश का कारण उगलवाता हूं।
TSSSS
नागराज ने चाल तो अच्छी चली थी। परन्तु वह ये भूल गया था उस पर तो सिर्फ मिश्रित जहर ही असर करता है-
परन्तु दूसरी वस्तुओं और आम इंसानों को अकेली विष फुंकार भी नुकसान पहुंचा सकती है-
अरे! यह तो वार उल्टा पड़ गया! पर मेरे पास इसका इलाज भी है। नागफनी सर्पों को आदेश देता हूं कि इसके फनों का मुख ऊपर आकाश की तरफ मोड़ दें!...
...फिर देखता हूं कि यह किसको नुकसान पहुंचा पाएगा!
हलाहलकंट के दोनों फन ऊपर की तरफ तन गए। और इस बार उनसे जो विष फुंकारों की लहरें निकलीं-

उन्होंने थोड़ी सी ऊपर जाकर एक छोटे से बादल का रूप धारण कर लिया-
और फिर महानगर के उस भाग में एक विनाशकारी वर्षा होने लगी-
ओह! यह तो विष की वर्षा होने लगी...
...इसको रोकना होगा! और इस विष को मेरा विष ही काट सकता है!
नागराज की तीव्र विष फुंकार 'विषबादल' की तरफ लपककर उसको नष्ट करने लगी-
इस बादल को नष्ट करने के साथ-साथ हलाहलकंट की आजाद भी करना होगा। वरना विष बादल बनता ही रहेगा!
परन्तु आजाद होने के साथ ही यह फिर से मुझ पर हमला कर देगा! अब इसको जिन्दा पकड़ने का विचार त्यागना पड़ेगा! क्योंकि इस चक्कर में जान-माल का नुकसान होता ही रहेगा!...
...परन्तु इसको नष्ट करूं तो कैसे? यह तो मेरे सारे वारों को विफल कर देरहा है! इसकी सबसे बड़ी ताकत है इसके दो विषों का मिश्रण! जो मुझ तक को नुकसान पहुंचा रहा है! ओह! अगर यह मिश्रण मुझे नुकसान पहुंचा सकता है तो इसको भी जरूर पहुंचाएगा!
धड़ाक

इसी वक्त- महानगर से बहुत दूर हिमालय की बर्फीली चोटियों से घिरी एक घाटी में-
इस मूर्ति की बर्फ और कड़ी हो रही है! यानी हमारा विनाश दूत हलाहलकंट मानवों पर भारी पड़ रहा है!
अगर हलाहलकंट सफल हो गया तो हम पूरी शक्ति के साथ हमला कर सकते हैं!
वहां कुछ प्राणी हलाहलकंट की सफलता की कामना कर रहे थे-
पर यहां नागराज का इरादा कुछ और था-
इसके विषों का इसी पर वार करने के लिए मुझे पहले अपने आपको विवश दिखाना होगा!...
...ताकि यह मुझ पर अपने फुंकार मिश्रण से हमला करने की कोशिश करे! और उसी पल मैं...
...इसके एक फन को इसके दूसरे फन में घुसा दूंगा! दोनों जहर आपस में मिश्रित होने लगेंगे... और अगर मेरा ख्याल सही है तो...
फच्चाक
...इस मिश्रण के असर से इसका शरीर स्वयं ही गलना शुरू हो जाएगा! कुछ-कुछ वैसे ही जैसे इंसान के खून में कुछ गन्दगी मिलने से इंसान को भी जान का खतरा पैदा हो जाता है!

नागराज का यह वार सही पड़ा था। हलाहलकंट का शरीर, अपने ही जहरों का मिश्रण न झेल पाने के कारण गल रहा था-
और इधर हलाहलकंट का शरीर गलने के साथ-साथ-
दूर कहीं पर, हलाहलकंट की बर्फ से बनी मूर्ति भी पिघलने लगी थी-
मंत्रित बर्फ का पुतला पिघल रहा है!...
... मैं हलाहलकंट से मानसिक संपर्क भी फिर से स्थापित नहीं कर पा रहा हूं। इसका एक ही अर्थ हो सकता है...
... और वह यह कि हलाहलकंट मृत्यु को प्राप्त हो गया!
हलाहल मृत्यु को प्राप्त हो गया? पर कैसे? वह तो हममें से ही एक योद्धा था। और हममें दैवीय अंश है। मानवों का कोई भी वार या अस्त्र हमको मार नहीं सकता...
... मानसिक संपर्क टूटने के कुछ क्षण पहले हलाहल 'नागराज' नामक एक मानव सर्प से लड़ रहा था। उसने हलाहल के विष का प्रयोग उसी पर कर दिया!

तो क्या हमको हमेशा मानवों से छिपकर रहना होगा? उनसे डरकर जीना होगा? मानवों के बराबर होने का हमारा सपना क्या कभी पूरा नहीं होगा? मानवों से ज्यादा शक्तिशाली होने के बावजूद हम उनसे जीत नहीं पा रहे हैं!

जीत सकते हो, शीत नागों के कुमार! लेकिन सिर्फ तभी जब महा योद्धा त्रिनाग कालदूत तुम्हारा साथ देने को राजी हो! वह चाहें तो अकेले ही मानवों का समूल नाश कर दें!

कालदूत को वश में करना कौन सी बड़ी बात है। हममें दैवीय शक्ति है। उसके सामने तो कालदूत ठहर ही नहीं पाएगा!

इस भ्रम में न रहो कुमार...

... कालदूत योद्धा होने के साथ-साथ तपस्वी भी है। और पुराण गवाह हैं कि तपस्वियों की शक्ति के आगे देवता भी हार गए थे। उसको अपने कब्जे में करने की सोचो जरूर, पर उसकी शक्ति को कम करके मत आंको!

फिर आपकी राय में हमको क्या करना चाहिए?

नागद्वीप पर हमला! नागद्वीप कालदूत की कमजोरी है। उसका विनाश होते देखकर वह हमारी बात मानने को विवश हो जाएगा!

आप ठीक कहते हैं। हमारा हमला नागद्वीप पर ही होगा। बस, हमको इस बात का ध्यान रखना होगा कि हमारे हाथों नागद्वीप के किसी नागभाई की जान न जाए!
वरना हमको नागबंधुओं का सहयोग मिलने के बजाय उनका विरोध मिलने लगेगा!
इधर नागद्वीप पर हमले की योजना को अंतिम रूप दिया जा रहा था-
और इधर नागद्वीप में एक गहरी समस्या पर गहन विचार-विमर्श चल रहा था-
मैंने कल पूरे दिवस ही तुम्हारी समस्या पर सोच-विचार किया है कुमारी विसर्पी। और मैं एक अधूरे निर्णय पर पहुंच पाया हूं...
अधूरे निर्णय पर! अधूरा निर्णय कैसा महात्मन?
मैं तुमको अभी शासक पद छोड़ने की इजाजत नहीं दे सकता हूं। परन्तु कुछ दिनों के अवकाश पर जाने की इजाजत दे सकता हूं।
अवकाश! छुट्टियों का मैं क्या करूंगी महात्मन?
नागराज से मिलने महानगर जाओगी। उससे मिलकर अपने निर्णय पर आपस में विचार-विमर्श करो। उसकी भी राय जान लो। और उसके बाद तुम जैसा चाहोगी, मैं वैसा ही करने पर बाध्य होऊंगा।... क्योंकि जैसे भीष्म पितामह कुरुवंश के महाराज की बात नहीं टाल सकते थे, वैसे ही मैं भी नागद्वीप के सिंहासन का आदेश नहीं टाल सकता हूं।

आपका विचार उत्तम है महात्मन! परन्तु मैं नागद्वीप से नागराज के पास अगर जाऊंगी तो विदा होकर! उसकी पत्नी के रूप में। वैसे भी मैं अपने विवाह की बात स्वयं नागराज से करूं तो यह अच्छा नहीं लगेगा। बेहतर है अगर यह बातचीत आपके सामने ही हो!
ठीक है पुत्री! मैं अभी नागराज से मानसिक संपर्क स्थापित करके उसको यहां पर आने के लिए कहता हूं!
महानगर के आकाश पर उड़ता महानगर का रखवाला एकाएक चौंक उठा-
महात्मा कालदूत मुझसे मानसिक संपर्क बना रहे हैं। जरूर कोई अति आवश्यक बात है...
क्या बात है महात्मन! आपने मुझे कैसे याद किया? आदेश कीजिए!
हम एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में तुम्हारी मदद चाहते हैं नागराज!
तुम शीघ्रतिशीघ्र नागद्वीप के लिए रवाना हो जाओ। हम वहीं पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं!
जो आदेश महात्मन!
मैं अभी नागद्वीप के लिए रवाना हो जाता हूं!
हमने नागराज को संदेश भेज दिया है विसर्पी! उसके यहां पर पहुंचने पर हम अपने अधूरे निर्णय को आखिरी रूप दे देंगे!
यह कोलाहल कैसा हो रहा है? बाहर चलकर देखना चाहिए!

बाहर निकलते ही कालदूत और विसर्पी दोनों ही स्तब्ध रह गए–
यह क्या ? एक फनरूपी बादल नागद्वीप पर छाता जा रहा है। यह जहरीला बादल है। और यह किसी भिन्न प्रकार के विष से बना हुआ है।...
...क्योंकि इसको छूकर आने वाली वायु, नागद्वीप के अति जहरीले सर्पों पर भी घातक असर कर रही है!
यह काम किसका हो सकता है, महात्मन?
नागद्वीप पर हमला करने की हिम्मत कौन कर सकता है ? और वह भी आपके रहते?
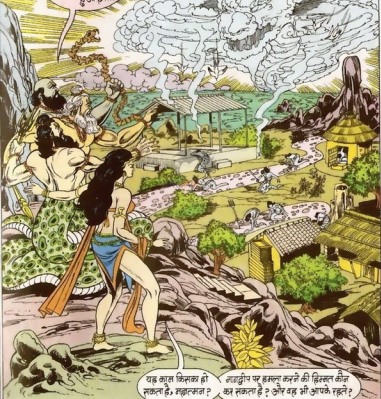
इस प्रकार की शक्ति वाले नागों को तो मैं जानता हूं। पर वे नागद्वीप पर हमला क्यों कर रहे हैं?
खैर, सबसे पहले तो इस विषैले 'फन घन' को और नुकसान पहुंचाने से रोकना होगा!
कालदूत के दंड से, तेज हवाएं निकलकर बादलों को छिन्न-भिन्न करने लगीं—
और उसी पल—
व्यर्थ का प्रयास मत करो, काल दूत! 'वायु-वार' से ये 'विषघन' टुकड़ों-टुकड़ों में टूट अवश्य जाएगा, परन्तु नष्ट नहीं होगा! वैसे भी यह वार तुम्हारे नागद्वीप के सैनिकों को बेहोश करने के लिए था। ताकि वे हमारे और तुम्हारे वार्तालाप के बीच में हस्तक्षेप न कर सकें!
शीत नाग! मैं जानता था कि ये 'फनवार' तुम लोगों के अलावा और कोई नहीं कर सकता!
परन्तु इस दुस्साहस का मतलब क्या है? क्यों आए हो तुम लोग नागद्वीप पर? और मुझसे किस प्रकार का वार्तालाप करना चाहते हो?
तुम्हारे सोए अभिमान को जगाने आए हैं हम! तुम एक योद्धा हो, कालदूत! तपस्वी नहीं! उतार फेंको यह शान्ति का चोला और नागों को उनका उचित हक दिलाने में हमारी सहायता करो!

उचित हक ? तुम किस उचित हक की बात कर रहे हो शीत नाग कुमार ?
मानवों को नष्ट करने में हमारी सहायता करो ! नागजाति की श्रेष्ठता मानवों के ऊपर साबित कर दो !
पृथ्वी पर रहते तो सभी हैं, लेकिन किसी भी प्रजाति की श्रेष्ठता तो प्रकृति तय करती है !
हम या तुम नहीं ! इसीलिए यह हठ छोड़ो और हिमालय पर वापस लौट जाओ !
मुझे आभास था कि तुम मेरी प्रार्थना को ठुकरा दोगे ! इसीलिए अब मुझे तुमको अपना आदेश मानने के लिए विवश करना पड़ेगा !
तुमको युद्ध में हराकर अपना गुलाम बनाकर !
र्रर्रर्र
शीत सैनिको ! बंदी बना लो कालदूत को !
कालदूत नहीं, महात्मा कालदूत बोल, शीत नाग ! और तू इनको नहीं, ये तुझे बंदी बनाएंगे राजकुमारी विसर्पी के राज-आदेश पर !
जो आज्ञा राजकुमारी ! इन सर्पों को मेरे शरीर में रहने वाले सर्प बंदी बनाएंगे !
ओह, तो तू राजकुमारी विसर्पी का आदेश मानता है ?
खैर ! कुछ ही देर बाद तू मेरा आदेश मानने लगेगा कालदूत !

क्योंकि तू मेरा पालतू नाग बन जाएगा!
तेरे वारों का कालदूत पर कोई असर नहीं होगा, शीतनाग!...
... लेकिन कालदूत का तू एक वार भी नहीं झेल पाएगा!
आऽऽऽह!
तू भूल रहा है कालदूत कि हम शिवजी के कंठनाग के वंशज हैं!
हममें दैवीय अंश है! तेरा कोई भी वार हम पर घातक असर नहीं करेगा!

'दैवीय अंश' ही है न तुममें? देवता तो नहीं है न तू? अगर तू देवता होता भी तो भी मेरा मांत्रिक तंत्र तुझे छोड़ता नहीं!
मेरे मांत्रिक वार से तुझे न तो तेरी 'मस्तकमणि' बचा सकती है, और न ही कोई और शक्ति!
कालदूत के तीनों शरीरों के हृदयों से निकला मांत्रिक तंत्र वार सचमुच गजब का शक्तिशाली था-
कड़ड़ड़ाम
शीत नागकुमार को घुटनों पर ला पटका उस वार ने-
अगला वार निश्चित रूप से शीत नागकुमार को बंधनों में जकड़ देता-
अगर-
अगर शीत नागगुरू अपनी शक्ति से कालसर्पों को बेबस न कर देते-
नागगुरू ने शीत नागकुमार को बचने का जो अवसर दे दिया था-
उसका उसने भरपूर लाभ उठाया-
अगले ही पल नागकुमार का फन खुल गया-
हिस्स्स्सात्तक

और कालदूत का अगला मांत्रिक तंत्र उस खुले फन द्वारा सोख भी लिया गया–
सर्रर्राचटक
और पलटकर उसी तंत्र का वार वापस कालदूत पर कर भी दिया गया–
तू शायद जानता नहीं है कालदूत कि जब हमारा चमत्कारी फन खुलता है तो कोई भी मांत्रिक वार परावर्तित कर सकता है। हमारी मुख्य ताकत हमारा फन है। और जब इसका अपना वार होता है...
...तो उससे कोई नहीं बच सकता!
खुले फन में से शीत किरणें निकलने लगीं–
और कालदूत का शरीर ठंडी बर्फ के खोल में कैद होने लगा–

धीरे- धीरे कालदूत के शरीर पर जम रही बर्फ की पर्त मोटी होने लगी-

ओह! इस शक्ति के बारे में तो मैं भूल ही गया था! शायद इसलिए क्योंकि शीत सर्पों में यह शक्ति केवल शीत नागकुमार के पास ही है! पर अब मैं क्या करूं?

इस बर्फीले कवच में न तो मैं तंत्र चलाने के लिए मंत्रों का उच्चारण कर सकता हूं, और न ही हाथों से तंत्र वार कर सकता हूं। दम भी घुटता जा रहा है!

इधर कालदूत, शीत नागों से पराजित होने की कगार पर खड़ा हुआ था-

और उधर नागद्वीप की तरफ बढ़ता नागराज, अभी भी नागद्वीप से काफी दूर था-

महात्मा कालदूत ने आखिर मुझे बुलाया क्यों है? ऐसी क्या गंभीर समस्या सामने आ गई, जिसमें मेरे सहयोग की आवश्यकता आ पड़ी है? वैसे महात्मा कालदूत ज्यादा परेशान नहीं थे, बल्कि प्रसन्नचित्त ही लग रहे थे!

परिस्थिति काफी बदल चुकी थी-

मेरे रहते आप कभी पराजित नहीं हो सकते महात्मा कालदूत! मैं गुफा के अन्दर से यह जलती मशाल ले आई हूं आप पर जमी बर्फ को पिघलाने के लिए।

वैसे भी नागराज अब यहां आता ही होगा। उसके यहां पर आने के बाद ये दुष्ट यहां से बच कर कभी नहीं जा पाएंगे।

नागराज! वह... वह तो महानगर में रहता है। वह नागद्वीप क्यों आ रहा है? नागद्वीप से उसका क्या संबंध है?

इसका जवाब मैं देता हूं शीत नाग गुरु! नागराज का संबंध नागद्वीप से जन्म के समय से है! वैसे भी वह कुमारी विसर्पी का होने वाला पति है! इन दोनों नातों से उसका संबंध नाग द्वीप से जन्म-जन्मान्तर का हो गया है। परन्तु तुमको परास्त करने के लिए मुझे नागराज की सहायता की आवश्यकता नहीं है! अब तक मैं तुम लोगों से महात्मा कालदूत की तरह पेश आ रहा था...

... पर अब मैं योद्धा कालदूत की तरह पेश आऊंगा!

अगर उसमें दैवीय शक्तियों का अंश नहीं होता, तो यह वार निश्चित रूप से शीत नागकुमार की जान ले लेता—

परन्तु इस वार से वह सिर्फ थोड़ा घायल हुआ—

और उसने संभलकर—

फिर से कालदूत पर घातक प्रहार कर दिया—

कालदूत के दंड का भीषण वार खाकर शीत नागकुमार कई कदम पीछे जा गिरा—

नागकुमार कालदूत को हराकर अपना सेवक कभी नहीं बना पाएगा...

...परन्तु मेरे दिमाग में एक दूसरा रास्ता आ रहा है!

कालदूत को गुलाम बनाने की कोशिश करने से अच्छा है कि कुमारी विसर्पी को गुलाम बना लिया जाए। क्योंकि कालदूत स्वयं उसी का आदेश मानने को मजबूर है।
अगले ही पल शीतनागगुरु-
विसर्पी की तरफ लपक गया-
नागकुमार! तुम कालदूत को उलझाए रहो ताकि ये विसर्पी की मदद को न आ पाए! मैं विसर्पी को यहां से आकाश मार्ग द्वारा ले जाता हूं!...
...उसके बाद तुम भी तुरन्त वहां पर पहुंच जाना! विसर्पी का अब तक विवाह नहीं हुआ है...
...हम तुम्हारा विसर्पी से विवाह करा देंगे! फिर तुम नागद्वीप के राजा बन जाओगे और कालदूत तुम्हारा आदेश मानने को विवश...
ओह!
विसर्पी कोई मक्खन की डली नहीं है जिसे जीभ पर रखा, और पिघल गई!
मैं समय रहते विसर्पी को नहीं बचा पाऊंगा! यह शीतनागकुमार मुझे उस तक पहुंचने नहीं देगा! अब नागराज की मदद जरूरी लग रही है!...
...मानसिक संपर्क बनाकर देखता हूं कि नागराज कहां पर है! ... ओह! नागराज है तो पास में ही है फिर भी उसे थोड़ा सा वक्त लग जाएगा!
एक ही रास्ता है! अपनी शक्ति का प्रयोग करके विसर्पी को नागराज के पास भेज देता हूं!

नागद्वीप का आधा रास्ता तय कर चुका नागराज एकाएक चौंक उठा-
अरे, महात्मा कालदूत का मानसिक संदेश आ रहा है। वे विसर्पी को योग शक्ति द्वारा मेरे पास भेज रहे हैं!
पर क्यों? महात्मा कालदूत काफी उखड़ रहे थे! कारण बताने से पहले ही मानसिक संपर्क तोड़ दिया!
महात्मा कालदूत द्वारा मानसिक संपर्क तोड़ने का कारण यही था कि उनके पास अब और समय नहीं था-
विसर्पी शीत नागगुरू से तो बच गई, लेकिन एक शीत नाग मेरे सर्प-सैनिक को परास्त करके विसर्पी की तरफ लपक रहा है!
विसर्पी, इस सैनिक को दूर फेंको! मैं तुमको नागराज के पास प्रेषित करने जा रहा हूं!
नहीं! रोको इसको!
शीत नागगुरू बौखलाने के अलावा कुछ नहीं कर पाया। विसर्पी का शरीर, सूक्ष्म कणों में बदल कर 'दूर प्रेषित' होना शुरू हो गया-
!!

नागगुरू का आदेश मिलते ही शीत
नारा सैनिक विसर्पी की तरफ लपक पड़ा-
और योग किरणों के घेरे में आकर खुद भी विसर्पी के साथ ही कणों में बदलकर 'दूर प्रेषित' होने लगा-
ओह! यह क्या हो गया?
और नागराज की 'सर्पनौका' में एक आश्चर्यजनक दृश्य आकार लेने लगा-
और नागद्वीप में-
अब यहां पर रुकने का कोई अर्थ नहीं है कुमार!
हमको विसर्पी के पीछे जाना होगा।
तुम उड़ नहीं सकते इसलिए मैं तुमको अपनी शक्ति से ले चलता हूं।
जाओ, जाओ!
लेकिन वहां जाने से पहले सौ बार सोच लेना! वहां पर नागराज होगा!
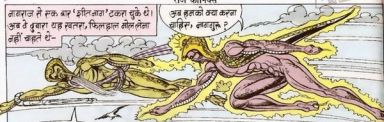
नागराज से एक बार 'शीतनाग' टकरा चुके थे। अब वे दुबारा यह खतरा, फिलहाल मोल लेना नहीं चाहते थे–
अब हमको क्या करना चाहिए, नागगुरू?
फिलहाल दूर से ही सारा माजरा देखना होगा! जो मानव नाग हला-हलकंट का नामोनिशान मिटा दे, उसके सामने अभी जाना बुद्धिमानी नहीं है!
हम जो भी योजना बनाएंगे, सोच समझकर ही बनाएंगे।
नागगुरू का निर्णय सचमुच बुद्धिमानी भरा था–
क्योंकि नागराज विसर्पी पर मंडरा रहे खतरे को देखकर रौद्र रूप में आ गया था–
मुझे यह तो पता नहीं कि तू कौन है और विसर्पी से क्या चाहता है? पर इतना मैं जरूर समझ गया हूं कि तू वही खतरा है, जिसके कारण महात्मा कालदूत को यह कदम उठाने पर विवश होना पड़ा!
ये शीत-नाग है नागराज! और ये महात्मा कालदूत के हाथों मानवों का विनाश करवाना चाहते हैं! और महात्मा कालदूत को ऐसा करने के लिए ये मुझसे विवाह करके विवश करेंगे!
ओह! तब तो इस फनियल की खाली खोपड़ी में कुछ बुद्धि भरनी ही पड़ेगी!
मेरे और इस लड़की के बीच में मत पड़ नागराज! वरना मुझे तो तू कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाएगा, पर अपनी जान से जरूर हाथ धो बैठेगा!
सांय्य
यह धमकी मैं हफ्ते में कम से कम दो बार तो सुन ही लेता हूं! पर अ
तक कोई भी इस धमकी
को सार्थक करके नहीं
दिखा पाया!

जबकि मैंने हर बार ऐसी धमकी वालों की खूब पिटाई की है। जानते हो कैसे? पहले मैं सर्प सेना से उनके हाथ बांध देता हूं...
...फिर उनके पैर बांध देता हूं!...
...और फिर उनकी पिटाई करता हूं!
तड़ाक
आऽऽऽह!
तेरे सर्प बंधन सचमुच मजबूत हैं नागराज! इनको खोलने में मुझे समय लगेगा! पर फिर भी तेरा कोई भी वार मुझे नुकसान नहीं पहुंचा पाएगा!
यही बात मुझसे थोड़ी देर पहले एक और सर्प मानव ने कही थी। हलाहलकंट नाम था उसका! कहीं तुम दोनों का आपस में कोई संबंध तो नहीं है?
है, नागराज, है! वह भी हमारी जाति का ही एक नाग योद्धा था! शीत नाग योद्धा!
मैं जानता हूं कि वह तेरे ही हाथों मारा गया है! मैं तुझे उस हत्या की भी सजा दूंगा!
शीत नाग! यह नाम तो मैंने पहले कभी नहीं सुना! पहले महानगर पर हमला, और फिर नाग द्वीप पर!
क्या चाहते हो तुम लोग? क्या योजना है तुम्हारी? बताओ वरना मेरी तीव्र विष फुंकार तुम्हारे प्राण हर लेगी!

आऽऽऽह! महाघातक है तेरी विष फुंकार! यह मुझे मार तो नहीं सकती, पर बेहोश जरूर कर सकती है। तुमसे निपटने के लिए अपनी शक्तियों का प्रयोग करना होगा!
विष फुंकार का असर होते देखकर, नागराज थोड़ा असावधान हो गया था, और यह असावधानी उसे काफी महंगी पड़ी–
तूने मुझसे पानी के पास उलझकर बहुत गलती की है नागराज!
मैं अपने राजकुमार शीत नागकुमार की तरह शीत तरंगें तो नहीं छोड़ सकता, लेकिन अपने स्पर्श से पानी को जमा जरूर कर सकता हूं!
समुद्र की सतह कई योजन तक बर्फ की तीन कदम मोटी पर्त से ढक जाएगी, और तू ठंड से और दम घुटने से प्राण त्याग देगा!
आऽऽह! यह सच कह रहा है! मैं बर्फ की इस मोटी पर्त को तोड़ नहीं सकता हूं, पर इतनी देर में यह शीत नाग भी विसर्पी को लेकर कहीं नहीं जा पाएगा। क्योंकि सर्प नौका के चारों तरफ बर्फ है!

र्प नौका' बनाने वाले मेरे सर्पों पर ठंड का
सर शायद इसलिए नहीं हो रहा है। क्योंकि
शीत नाग के संपर्क में हैं। लेकिन मुझ पर
ठंडे हो रहे पानी का हल्का-हल्का असर
र हो रहा है। अगर मैंने जल्दी से बाहर निकलने
रास्ता नहीं ढूंढा तो यह कहना मुश्किल है कि
री मौत ठंड से होगी, या दम घुटने से!
...'पूरी ज़िंदगी', जो अगर बचती तो सालों की होती! पर अब तो... एक मिनट!
बाहर निकलने का एक रास्ता है! इसके लिए मुझे अपनी बेल्ट में लगे इस धातु के सांप को निकालना होगा!...
...और इसको ड्रिल की शक्ल में मोड़कर इस बर्फ में एक छेद करना होगा...
...और फिर इसको नीचे से सीधा करके बर्फ के आर-पार निकाल देना है!
फिर इससे पहले कि बर्फ में हुआ छेद तेजी से बंद हो जाए...
...मैं उससे भी ज्यादा तेजी से...
...अपने शरीर को इच्छाधारी कणों में बदलकर इस छेद के पार निकल जाऊंगा!
ह बर्फ की सतह
रों तरफ इतनी दूर-
तक फैली हुई है कि
के छोर तक मैं समय
ते पहुंच ही नहीं
पाऊंगा!...
...और जिस बर्फ को मैं तोड़ तक नहीं पा रहा हूं, उसमें अपने शरीर के साइज का छेद बनाने में तो मेरी पूरी ज़िंदगी ही लग जाएगी!...

नागराज पर नजर जमाए हुए शीत नाग एकाएक चौंक उठा-
अरे! कहां गया नागराज? अभी-अभी तो नुकीली धातु से बर्फ खोदकर मौत से बचने की आखिरी कोशिश कर रहा था! अचानक कहां गायब हो गया?
मैं यहां पर हूं दुष्ट शीतनाग! और अब तू मुझे बताएगा कि तुमलोगों का इरादा क्या है? वरना अपनी जान गंवाएगा!
ऊपर से यह दृश्य देख रहे शीत नागगुरू की भौहों पर परेशानी वाले बल पड़ गए-
अनर्थ होने जा रहा है नागकुमार! शीत नाग नागराज से जीत नहीं पाएगा! नागराज अ विसर्पी को अपने साथ ले गया तो तुम उसे कभी पा नहीं पाओगे!
अब हमको क्या करना चाहिए, नागगुरू?
अपनी मणि का प्रयोग करो! हांलाकि चले जाने से हमारी पूरी जाति की शक्ति होजाएगी! परंतु फिर भी हम लाभ में ही रहें

ुम 'शरद मणि' की विसर्पी
मस्तक में धंसा दो! और
र तुम जानते ही हो कि क्या
गा! फिर विसर्पी सिर्फ तुमसे
विवाह कर पाएगी! और
किसी से नहीं!
मैं समझ गया नाग-गुरू! ये देखिए मेरा 'शरद मणि' का सटीक वार!
णि, विसर्पी के मस्तक की तरफ बढ़ चली-
वहां पर, जहां नागराज शीत नाग को अपनी तीव्र विष फुंकार से बेहोशी की दुनिया में पहुंचा चुका था-
अब हम इसको नागद्वीप लेकर चलते हैं विसर्पी! जहां महात्मा कालदूत अपनी योगमाया के द्वारा इसके मस्तिष्क को पढ़ लेंगे!
फुंकार
तुम्हारा विचार उत्तम है नागराज! वैसे भी तुम तो...

... नागद्वीप ही आ रहे...
...ओह! यह क्या?
यह मणि आकाश से आई है विसर्पी!

...फिर इनसे निपटूंगा!
बर्फ टूट रही है! शीतनाग के बेहोश होने के साथ ही बर्फ जमी नहीं रह पा रही है! हम सर्प नौका द्वारा यहां से जा सकते हैं!
परन्तु अब हम नागद्वीप नहीं जाएंगे, क्योंकि हम महानगर के ज्यादा पास हैं। मैं तुमको महानगर ले चलता हूं!

ऊपर नजर उठाते ही गराज चौंक उठा-
अरे! दो नाग आकाश में डरा रहे हैं! जरूर ये तुम्हारा ही पीछा कर रहे हैं विसर्पी! मैं फिलहाल इनसे भिड़ना नहीं चाहता! परन्तु तुमको किसी सुरक्षित स्थान पर पहले पहुंचा दूं!...
जल्दी करो नागराज! ये दोनों नाग शीतनागगुरू और नागकुमार हैं!
और... इस मणि के कारण मेरे शरीर में अजीब सी हल-चल सी हो रही है!

ऐसा लग रहा है, जैसे मेरे शरीर में कुछ बदलाव आ रहा हो!
इस मणि के कारण ही ऐसा हो रहा है विसर्पी! इसको अपने माथे से नोंचकर फेंक दो!
विसर्पी ने अपने माथे से 'शरद मणि' को नोंच फेंकना चाहा, परन्तु जरा सा खींचते ही खुद दर्द से तड़प उठी–
आऽऽऽह! मैं इसको नोंच नहीं पा रही हूं नागराज! इसके एक सूत बाहर खिंच ही मुझे ऐसा लगा, जैसे इस साथ-साथ मेरी जान भी बाहर निकल रही हो!
तुम्हारे... तुम्हारे हाथों की क्या हो रहा है विसर्पी! ये... ये तो शीत नाग की तरह हो रहे हैं! ...
बेकार की कोशिशें मत करो नागराज!
... मैं तुमको महानगर में 'स्नेकपार्क' ले चलता हूं! वहां की रिसर्च टीम जरूर इस समस्या का इलाज ढूंढ़ लेगी। वरना हम महात्मा कालदूत से संपर्क करेंगे!
यह 'शरद मणि' है! न तो इसके असर को समाप्त किया जा सकता है, न ही हमारे अलावा और कोई इसे विसर्पी के मस्तक से निकाल सकता है। अगर विसर्पी को बचाना चाहते हो...

... तो उसको हमारे हवाले कर दो! वरना विसर्पी की वह हालत हो जाएगी, जिसे देख-कर तुम न तो जिन्दा रह सकोगे और न ही मर सकोगे!

स्वप्न देखना छोड़ दो शीत नागकुमार! नागराज जबतक जिन्दा है तुम विसर्पी को छू भी नहीं सकते!

नागराज सुबह से निकला हुआ है, और अभी तक वापस नहीं आया! पहले एक विचित्र नागप्राणी से उसकी लड़ाई हुई...

... नागप्राणी तो नष्ट हो गया, परन्तु नागराज वापस आने के बजाय न जाने कहां चला गया? मुझसे कोई संपर्क भी नहीं किया उसने!

ऐसा तो अक्सर होता है भारती! अपराधियों और दुष्टों से समाज को बचाने का काम तुम्हारी तरह किसी कार्यालय का काम नहीं है जो दस बजे से छः बजे तक होता है।...

... इसमें न तो दिन देखा जाता है न ही रात! नागराज तो पहले भी कई-कई दिनों तक बाहर रह चुका है बिना किसी संपर्क के! आज ऐसा क्या हो गया कि तुम इतनी चिंतित हो उठी हो?

वो... बाबा, दरअसल आज सुबह मैंने नागराज से... से...

क्या कह दिया था तुमने आज सुबह नागराज से?

इससे पहले कि भारती को यह बताने के लिए मजबूर हो जाना पड़ता कि उसने नागराज से प्यार का इजहार किया था–

नागराज ने खुद ही उसको इस दुविधा से बचा लिया–

★नागराज इस भवन में कैसे आया? यह जानने के लिए पढ़े: खजाना

अभी देखते लेते हैं कि नागराज दोनों में से किसको चुनता है?
समझदार हो रहे हो कुमार! महानगर को अपने शिकंजे में लेना शुरू कर दो!
और अगले ही पल से, महानगर पर एक जहरीला फन फैलना शुरू हो गया—
सबसे पहले, हवा में उड़ने वाले प्राणी इसका शिकार बने—
और फिर जमीन पर चलने वाले प्राणी अपने होशोहवास खोकर जमीन को चूमने लगे—
ओह! उन नागों का तो फिलहाल पता नहीं चला है, लेकिन महानगर पर एक फनरूपी विषैला बादल छा रहा है! इसका स्रोत जहां पर होगा वे शीतनाग भी निश्चित रूप से वहीं पर होंगे! क्योंकि यह काम उनके अलावा और किसी का हो ही नहीं सकता!
नागराज तेजी से 'फनघन' के स्रोत की तरफ बढ़ चला—

और फिर– अपने घर में वापस पहुंचकर नागराज 'ध्यान साधना' में मग्न हो गया–

अब मुझे रास्ता दिखाइए महात्मन!

और महात्मा कालदूत से मानसिक संपर्क साधकर पूरी स्थिति को विस्तार पूर्वक बता दिया–

हम पूरी बात समझ गए नागराज! परन्तु इन शीत नागों से सीधे युद्ध में जीत पाना अगर असंभव नहीं, तो मुश्किल अवश्य है।... इस फनघन को हटाने का और विसर्पी को अपने असली रूप में लाने का सिर्फ एक ही तरीका है...

मैं तुमको अपनी 'योग माया' से अभी महानगर से शीत नागों की घाटी में भेज देता हूं!

नागराज का शरीर योग लहरों में बदलकर-

मैं अभी 'शीत नाग घाटी' में सावधानी बरतने का संकेत भेज देता हूं। ताकि नागराज वहां पहुंचते ही हमारे योद्धाओं के हाथों से मारा जाए!
नागराज एक अपरिचित स्थान पर जरूर पहुंच गया था, परंतु से मार पाना इतना आसान नहीं था-
क्योंकि 'शीत सर्प' नागराज को स्थिर रहने देने वाले थे ही नहीं-
तड़ाक
आऽऽऽह! कौन?
हिमहिस्स! शीत नाग सेना का सेनापति! बर्फ ही मेरा शरीर है, और बर्फ ही मेरा अस्त्र! और इतना आभास तो तुमको भी है कि अगर मेरी शक्ति बर्फ है, तो तेरी कमजोरी बर्फ है!
यही 'शीत नाग घाटी' होनी चाहिए! बर्फीला नागफन चिन्ह यही इशारा कर रहा है! पर इस बर्फीले वातावरण में अपने शरीर में गर्मी बनाए रखने के लिए मुझे गतिमान रहना होगा! वरना यह शीत न तो मेरे सांपों को जिन्दा छोड़ेगी न ही मुझे!
नागराज को गतिमान बने रहने की फिक्र तो करनी ही नहीं चाहिए थी-
ये तो तूने ठीक समझा हिमहिस्स! बर्फ मेरी कमजोरी तो है!

...पर सिर्फ आइसक्रीम के रूप में! दूधवाली आइसक्रीम! बिना स्वाद रहा ही नहीं जाता है। लेकिन तू तो फीका-फीका है। तुझे खाऊंगा तो गला खराब हो जाएगा!
नागराज के उस भीषण वार ने हिमहिस्स के शरीर को कई टुकड़ों में तोड़ दिया-
लेकिन हिमहिस्स नष्ट नहीं हुआ। नागराज की विस्फारित आंखों के सामने-
उसके शरीर के टुकड़े गलकर आपस में फिर से जुड़ने लगे-
और इससे पहले कि नागराज स्थिति को पूरी तरह समझ पाता-
हा हा हा! देखी हिमहिस्स की शक्ति नागराज? एक ही वार में तेरा खात्मा हो गया!
बर्फीली तलवार उसके पेट के आर-पार हो चुकी थी-
हिमहिस्स को इस वार से उम्मीदें तो बहुत थीं-
लेकिन इस बार आश्चर्यचकित होने की बारी उसकी थी-
य... यह क्या? तलवार आर-पार होने के बाद भी तू बच गया! और...
...और तेरे शरीर की गर्मी से मेरी तलवार भी पिघल गई! खैर, यह तो फिर जुड़ जाएगी!

नागराज पर ऐसे मामूली वार असर नहीं करते! पर अब मैं जो वार करूंगा, वह तेरी जाति के नागों पर भी असर जरूर करता है!
फ़ ऊऊऊऊ
विष फुंकार! मैंने सुना तो है कि तेरी विष फुंकार बड़ी घातक है! पर ये असर तभी करेगी, जब मेरे शरीर के अन्दर पहुंच पाएगी! तेरी विष फुंकार तो मेरे शरीर को छूते ही जम जाएगी, और फिर शरीर पर से फिसलकर पहाड़ों में समा जाएगी!
और अब मैं तेरी कमजोरी पर वार करूंगा! तेरी शीत से कमजोर होने की कमजोरी! और यह काम मैं तेरे शरीर को...
?
...अपने शरीर में ढक कर करूंगा!
हिमहिस्स के शरीर ने अजीब रूप से पिघलकर नागराज के शरीर को अपने शरीर के अन्दर कैद कर लिया-
ओह! इस हालत में तो मैं सांस भी नहीं ले पाऊंगा! और मेरे शरीर की गर्मी तेजी से कम होने के कारण अपने सर्पों के साथ-साथ मैं भी सुषुप्तावस्था में चला जाऊंगा! और फिर शायद दम घुटने से मर भी जाऊंगा!
इधर नागराज एक कैद में फंस गया था-

और उधर भारती और वेदाचार्य के सर पर भी विसर्पी के कारण, खतरा मंडरा रहा था–
तुम्हारी यह हालत कैसे हो गई, विसर्पी? मेरे दादा तंत्र-मंत्रों की अच्छी काट जानते हैं! शायद वे तुम्हारी कुछ मदद कर सकें! वैसे कोशिश तो उन्होंने पहले से ही शुरू कर दी है...
... तब तक मुझे यह बताओ कि तुम नागराज को कैसे जानती हो? नागराज तुमको अगर यहां पर लेकर आया है तो जरूर उसकी कोई बहुत खास दोस्त होगी! कौन हो तुम?
वैसे तो मैं यहां पर नागराज की तलाश में पहले भी आ चुकी हूं! इस भारती से मिली भी हूं, लेकिन नागराज ने मुझे सिर्फ मित्र कहकर मिलवाया है। शायद वह इसको नागद्वीप के विषय में बताना नहीं चाहता! इसलिए पहले इसी से पूछ लूं कि ये लोग वास्तव में कौन हैं? नागराज से क्या रिश्ता है इनका? ★
चुप क्यों हो, विसर्पी? क्या सोच रही हो?
तुम्हारे ही विषय में सोच रही हूं, भारती! नागराज को मैं वर्षों से जानती हूं। पर उसने कभी भी तुम लोगों का जिक्र नहीं किया! फिर भी तुम लोग उसके काफी करीबी लगते हो..
हमारी और नागराज की मुलाकात ज्यादा पुरानी नहीं है। दरअसल मेरे दादा नागराज के वंश के राजज्योतिष रहे हैं!
नागराज के वंश के?
भारती, विसर्पी को नागराज की कहानी सुनाती चली गई–
ओह! तुम लोगों ने नागराज के लिए काफी त्याग किया है। तभी वह तुम लोगों की इतनी इज्जत करता है!
लेकिन फिर भी मैं उसके इतनी करीब नहीं हूं, जितना तुम समझ रही हो! मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है विसर्पी दीदी!
दीदी? तुमने मुझे 'दीदी' कहा! मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूं! जो मेरे वश में होगा, वह सब करूंगी!
★ भारती और विसर्पी की पहली मुलाकात के बारे में जानने के लिए पढ़ें-स्नेक पार्क
47

तुम तो नागराज के काफी करीब हो विसर्पी दीदी! मुझे नागराज के दिल की बात मालूम करके बता दो! मैं जानना चाहती हूं कि उसके दिल में मेरे लिए क्या भावना है? मैं तो उसे चाहती हूं, पर वह भी मुझे चाहता है या नहीं, यह मुझे पता कर दो!...
...तुम्हारे अलावा ऐसा और कोई नहीं है जिससे मैं यह काम कह सकूं!
विसर्पी के मस्तिष्क में आंधियां सी चलने लगीं। भारती उससे उसी के होने वाले पति के दिल का हाल मालूम करने को कह रही थी-
लेकिन इससे पहले कि वह कोई जवाब दे पाती-
एक कर्णभेदी आवाज ने उसका ध्यान खींच लिया-
ओह! ये तो वही दोनों शीत सर्प हैं जिन्होंने मेरा यह हाल कर दिया है!
नागराज की अनुपस्थिति का फायदा उठाकर ये अंदर घुसने की कोशिश कर रहे हैं!
घबराओ मत दीदी! यह दादा वेदाचार्य द्वारा बनाया गया घर है! और दादाजी तिलिस्म के महान जानकार हैं!
भारती बात को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रही थी-
क्योंकि कांच के टूटते ही लोहे की मजबूत सलाखों ने दोनों तरफ से बढ़कर खिड़की को घेर लिया-
लेकिन वेदाचार्य ने भवन का कोना-कोना तिलिस्म यंत्रों द्वारा सुरक्षित किया हुआ था-
छत के रास्ते अन्दर आने की कोशिश में शीत नागों का और भी बुरा हाल हो गया-
शीत नागकुमार और नागगुरु भी चौंक उठे-
य... यह क्या? इस भवन में तो सुरक्षा की अद्भुत व्यवस्था लगती है। खिड़की या दरवाजे के रास्ते से घुसने की कोशिश मत करो! हम छत तोड़कर अंदर घुसते हैं। वहां पर सुरक्षा व्यवस्था नहीं होगी।
नागगुरु, बचाओ! छत पर कोई छेद खुल गया है, और उसमें से भीषण वायु दबाव मुझे अन्दर खींच रहा है!

हफ हफ! यह तो कोई तिलिस्मी भवन मालूम पड़ता है! इसमें ऐसे घुसकर मौत को दावत देना है! अब कोई और रास्ता सोचना पड़ेगा!

इधर दो शीतनाग, विसर्पी के पास तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे-

और वहां से दूर एक शीतनाग हिमहिस्स, नागराज को अपने शिकंजे में फंसाने में सफल हो गया था-

आह! बेहोशी छा रही है! इस शिकंजे को मेरे साधारण नाग नहीं तोड़ सकते, पर नागफनी सर्प इस शिकंजे को तोड़ सकते हैं!

लेकिन उनको शरीर से बाहर निकालने के लिए मुझे इस ठोस बर्फ में कम से कम एक दरार तो करनी ही होगी। पर उसके लिए मुझे अपनी पूरी शक्ति लगानी होगी!

नागराज ने अपने शिथिल होते शरीर की पूरी शक्ति को संचित किया। ठंडी होती मांसपेशियों में एक बार फिर रक्त का संचार होने लगा-

कड़ड़ड़ाक

और कलाई के ऊपर की बर्फीली सतह में दरार पड़ गई-

और इससे पहले कि दरार फिर से आपस में जुड़ पाती-

नागफनी सर्प बाहर आ चुके थे-

और फिर नागफनी सर्पों के शरीर तेजी से हवा में लहराने लगे, और नागराज के शरीर पर चढ़े हिमहिस्स के बर्फीले शरीर को जगह- जगह से रेती की तरह रेतने लगे-

कुछ ही पलों बाद हिमहिस्स का शरीर जगह-जगह से टूट चुका था, और नागराज को उसके शरीर के शिकंजे से निकलने में जरा सी भी परेशानी नहीं हुई-
यह इसको हराने का तरीका नहीं है। इसका शरीर फिर से जुड़ जाएगा, टूटते ही इसका शरीर ठंडे पानी में बदलकर... आहा! अगर उस पानी को बर्फ बनने ही न दिया जाए तो?
अगले ही पल, नागराज की कलाइयों से सांपों की एक बाढ़ सी निकलकर हिमहिस्स के जुड़ते शरीर की तरफ लपकी-
हा ऽऽ ह! अब तू मुझ पर अपने मरियल सर्पों से हमला करेगा! यह भी करके देख ले! मुझे तो कुछ नहीं होगा, पर इनकी 'हिमसमाधि' जरूर बन जाएगी!
ये सांप तुझ पर असर नहीं करेंगे, हिमहिस्स, यह तो मैं भी जानता हूं। पर इनके शरीर की गर्मी तुझ पर जरूर असर करेगी!
मैं समझ गया तेरी चाल! तू मेरे बर्फीले बदन को इन हजारों सर्पों के शरीर की गर्मी से पिघलाकर पानी बनाना चाहता है!...
...पर तू हर बार ये क्यों भूले जा रहा है कि वह पानी फिर जमकर बर्फ बन जाएगा, और मैं फिर से अपने वास्तविक रूप में आ जाऊंगा!
इस बार नहीं हिमहिस्स! इस बार जैसे-जैसे तेरा शरीर पिघलता जाएगा...

…तेरे शरीर पर लिपटे मेरे हजारों र्प तेरी बूंदों को चाटते जाएंगे। न चेगा पानी, न जम पाएगी बर्फ, और न बन पाएगा तेरा शरीर…

…तू खत्म हो जाएगा हिमहिस्स! और मैं ठंडे हो गए सांपों को फिर से अपने शरीर में प्रवेश कराके गर्मी दे दूंगा!

और उधर महानगर में नागराज के तिलिस्मी बंगले पर मंडरा रहे शीत नागकुमार और नागगुरू, दोनों ही चौंक उठे–

हिमहिस्स की एक चीख के साथ ही मेरे साथ उसका मानसिक संपर्क टूट गया है!

मैं भी उससे संपर्क नहीं साध पा रहा हूं! इसका एक ही अर्थ लगता है। और वह यह कि नागराज के हाथों हिमहिस्स मृत्यु को प्राप्त हो गया है!…

…अब यहां पर रुके तो उधर नागराज हमारी बस्ती का न जाने क्या हाल कर डालेगा! हमको तुरंत हिमालय जाना होगा!

हिमालय पर नागराज पहली मुसीबत पार करके आगे बढ़ चुका था–

शीत नागों को मेरे यहां आने की खबर हो चुकी है। मुझे बहुत सतर्क रहना होगा!

क्योंकि रात के अंधेरे को खत्म करता हुआ सूर्य भी आकाश में चढ़ आया है!

अब मेरा सबसे पहला काम उस रक्त रूद्राक्ष को ढूंढ़ना है!

'रक्त रूद्राक्ष' तुझे कभी नहीं मिलेगा नागराज!

शीत नागकुमार और नागगुरू!

अपनी 'मिश्रित वि
फुंकारों का वार करके
गला डालो नागराज
शरीर!
जिन्दा मत छोड़
इसको!

अपने राजकुमार का आदेश मिलते ही-

शीत नागों ने चारों तरफ से नागराज के शरीर पर भांति-भांति के विषों की फुहार छोड़नी शुरू करदी-

आऽऽऽह! यह विष
मिश्रण तो उस विष मि
से कई गुना ज्यादा तेज
जो मुझ पर हलाहलकंट
छोड़ा था! यानी इनकी श
बर्फीले वातावरण में ज्यादा उ
उठती है! महानगर के गर्म वात
ने हलाहलकंट की शक्तियों
सोख कर रखा था!...

हां पर भी अगर गर्मी बढ़ जास्तो
न सर्पों की शक्तियां भी क्षीण हो
स्गी! पर यहां पर गर्मी कैसे बढ़
कती है? यहां परतो सिर्फ सूर्य की ही
र्मी है। और उसको ठंडा करने के लिस्
! हां! गर्मी बढ़ाने के लिस्र अब मैं
र्फ का ही इस्तेमाल करूंगा!

अरे! नागराज तो भाग रहा है! पीछा करो इसका!

नहीं! उसका पीछा करने का कोई मतलब नहीं है! शायद यह उसकी चाल हो! हमको यहां से दूर खींच ले जाने की! ताकि वह यहां वापस आकर रक्तरुद्राक्ष हासिल कर सके!

यहीं रुके रहो! नागराज वापस जरूर आस्गा। तब उसको वहीं मार डालना!

सूर्य इस वक्त बर्फ की उस शिला के पार चमक रहा है! मुझे उस शिला तक पहुंचना होगा!

नागराज का वापस आने का इरादा तो जरूर था। परन्तु शीत नागों की शक्तिहीन करने के बाद-

यह है वह बर्फ की शिला! अब मैं अपने नागफनी सर्पों को आदेश देता हूं कि वे इस बर्फ की सतहों को रगड़कर इसे 'कॉन्वेक्स लैंस' यानी 'मैग्नि-फाइंग लैंस' का रूप दे दें!

वह लैंस सूर्य की किरणों को स्क-त्रित करके इस घाटी में केन्द्रित करेगा!

घरर्रर्र्र

रगड़ड़ड़ड़

कड़ड़ड़

और जैसे 'मैग्निफाइंग लैंस' सूर्य की किरणों को केन्द्रित करके कागज या फूस जैसी चीज में आग लगा देता है...

...वैसे ही इस विशाल 'बर्फ लैंस' की किरणें इस घाटी के वातावरण को असाधारण रूप से गर्म कर देंगी!

अत्यधिक तेज गति से घूमते नागफनी सर्पों के कीलदार शरीरों ने बर्फ की सतह को रेतकर उसे एक विशालकाय 'मैग्निफाइंग लैंस' का रूप दे दिया-
जो सूर्य की तीखी किरणों को केन्द्रित करके घाटी की बर्फीली सतह पर एक दूसरे सूर्य को जन्म देने लगा-
और इससे पहले कि बढ़ती गर्मी का एहसास करके, अपने बचाव का कुछ साधन कर पाते-
सतह से उठती भाप ने उनके होश हवास को छीनना शुरू कर दिया-
फिलहाल तो ये नाग बेबस हैं, लेकिन ज्यादा देर तक नहीं रहेंगे। क्योंकि
की दिशा बदलने के साथ-
ही किरणों का केन्द्र भी घाटी से कहीं और
जाएगा!...
विज्ञान ने तंत्र पर विजय प्राप्त कर ली थी-
शीत नागों ने ऐसा चमत्कार पहले कभी नहीं देखा था! वे भौचक्के होकर घाटी की सतह पर उभरे सूर्य को देखते रहे-

... मुझे इससे पहले ही कुछ ऐसा इन्तजाम कर लेना होगा कि ये शीत सर्प मुझ पर दुबारा सम्मिलित हमला न करें! इसका सबसे अच्छा तरीका तो यही है कि मैं किसी प्रकार से शीत नागों के राजकुमार को बंदी बना लूं! पर कैसे? ये तो नाग फनी सर्पों के शरीरों को भी अपनी सिंश्रित विष फुंकार से गला सकते हैं!...

... एक तरीका दिमाग में आ तो रहा है! परन्तु मैंने आज तक उसका प्रयोग नहीं किया है! परन्तु अगर यह प्रयोग सफल रहा, तो शीत नागकुमार इस तरह से मेरा बंदी बन जाएगा कि न तो उसको कोई बगैर मेरे चाहे छुड़ा पाएगा...

... और न ही मुझ पर हमला करने की हिम्मत कर पाएगा!

नागराज की कलाइयों से सर्प निकलकर शीतनागकुमार के शरीर पर लिपटने लगे–

और फिर वे सर्प, नागकुमार के साथ-साथ नागराज के शरीर में प्रवेश कर गए–

?

और शरीर को पूरी तरह से ढकते ही वे नाग सूक्ष्म रूप में आना शुरू हो गए–

नागों के सूक्ष्म रूप में आने के साथ-साथ नागकुमार का शरीर भी सूक्ष्म होने लगा–

यह दृश्य देखकर अपने-अपने होश संभाल रहे शीतनाग आश्चर्यचकित भी हो गए और भयभीत भी–

तुम्हारे पास आश्चर्यजनक शक्तियां हैं नागराज! अब हम तुम पर हमला नहीं कर सकते! बताओ, क्या चाहते हो तुम?

सबसे पहले तो महानगर पर फैला हुआ विषैला 'फनघन' हटा लो। और फिर विसर्पी के मस्तक से वह मणि निकालकर उसको असली रूप में ला दो!

'फन घन' तो हम तुरन्त हटा लेंगे नागराज, लेकिन विसर्पी के मस्तक से मणि निकालना हमारे वश की बात नहीं है! उसका असर काटने के लिए रक्त रूद्राक्ष को उस मणि से सटाना होगा। परन्तु उस रक्त रूद्राक्ष को न हम प्राप्त कर सकते हैं, और न तुम!
क्यों? क्या बहुत कठिन स्थान पर रखा हुआ है वह रक्त रूद्राक्ष?
'गरल कुंड' के तल में! वही हमको हमारी सारी शक्तियां प्रदान करता है! क्षति से बचने की शक्ति भी!
'गरल कुंड'? यह क्या होता है?
आओ! मैं तुमको दिखाता हूं!
मेरे पीछे-पीछे आ जाओ!
देखो! यह है गरल कुंड! जब देवों और असुरों ने समुद्र मंथन किया था, और उसमें से महाभीषण विष 'गरल' निकला था तो देवों की प्रार्थना पर शिव भगवान ने उस विष को अपने कंठ में रख लिया था!
परन्तु गरल पीते समय विष की एक बूंद टपककर यहां पर गिर गई थी। यह 'गरल कुंड' उसी बूंद से भरा हुआ है!
इसका असर वातावरण में फैलने से रोकने के लिए शिवजी ने अपना एक रूद्राक्ष इस कुंड में डाल दिया था। इससे यह विष शान्त रहता है!
इस कुंड की अन्दरूनी सतह एक खास पत्थरों द्वारा बनी है। इसीलिए यह विष इस कुंड की दीवारों को गला कर इसके पार नहीं जा पाता!
परन्तु इस कुंड में उतरकर रूद्राक्ष तक पहुंचना असंभव है। क्योंकि यह विष हर वस्तु को गला सकता है!
सिवाय इस कुंड के पत्थरों के!
ससस्स! परन्तु, रक्त रूद्राक्ष तो मुझे पाना ही है!

मुझे 'रक्तरूद्राक्ष' तो हर हाल में पहुंचना ही है। सबसे पहले मुझे नागगुरू की बात की सच्चाई को जानना है! अगर यह विष इस पत्थर को पलभर में गला दे तो... गला दिया। यानी यह विष वास्तव में अत्यन्त घातक है! अब न तो मैं खुद रूद्राक्ष तक पहुंच सकता हूं और न ही किसी भी चीज को कुंड में डालकर रूद्राक्ष को ऊपर खींच सकता हूं!...
... सिर्फ एक चीज अच्छी है! और वह ये कि यह रूद्राक्ष, गरल कुंड के तल में पड़ा हुआ है!
इस बात का मैं फायदा उठा सकता हूं...
... मेरे शरीर में बसने वाले चमत्कारी नागफनी सर्पों, मेरे शरीर से बाहर आओ!
आज मैं वह काम करने जा रहा हूं जो मैंने आज से पहले कभी करने का प्रयास तक नहीं किया! और वह है इस सख्त चट्टानी सतह में एक पतली सुरंग बनाना! और उसके लिए मुझे तुम्हारी शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी!
मैं इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके सर्प रूप में आ रहा हूं! तुम मेरे शरीर से लिपट जाना!
अब मैं नागशक्ति से अपने शरीर को शक्तिशाली ड्रिल की तरह घुमाऊंगा, और तुम्हारे कांटेदार शरीर चट्टानी दीवारों को घिसते जाएंगे!
नागराज और नागफनी सर्प तेजी से चट्टानी सतह में सुरंग बनाने लगे-
इस घर्षण से चट्टानी सतह के साथ-साथ हमारे शरीर भी झुलस रहे हैं! हम ज्यादा देर तक सुरंग नहीं खोद पाएंगे नागराज!
अगर हम अभी रुक गए तो कभी भी विसर्पी को असली रूप में नहीं ला पाएंगे, नागफनी सर्पों...

...वैसे भी अब ज्यादा सुरंग बची भी नहीं है! हम गरल कुंड के तल के नीचे पहुंच चुके हैं। रक्त रूद्राक्ष एक शिवलिंग के ऊपर रखा हुआ है। अब हमको बस उस शिवलिंग का तला ढूंढ़ना है। यह रहा तला!
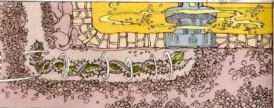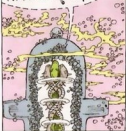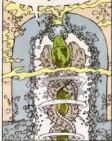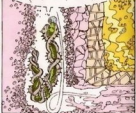
जहर की धार को मात देते हुए नागराज और नागफनी सर्प तेजी से वापस सतह पर आ मिले-

बस! अब जहर की धार और ऊपर नहीं आएगी! क्योंकि कोई भी द्रव अपनी हर सतह का समान स्तर बनाए रखता है! और यह धार गरल कुंड में भरे विष के स्तर के बराबर आ चुकी है!

काम समाप्त होते ही नागराज ने अपने वास्तविक रूप में आने में एक पल भी व्यर्थ नहीं किया-

यह तुमने क्या किया नागराज? अब गरल विष की यह धार चट्टानों को गलाती हुई न जाने कहां-कहां क्या-क्या गला डालेगी!

और साथ ही साथ इस रक्त रूद्राक्ष के चले जाने से हमारी शीत में लंबे समय तक जिन्दा रहने की शक्ति भी चली जाएगी!
इन दोनों समस्याओं का एक ही हल है नागगुरू! मुझे शीघ्रातिशीघ्र महानगर भेज दो, ताकि मैं विसर्पी को ठीक करके इस रक्त रूद्राक्ष को वापस यहीं गरल कुंड में पहुंचा दूं!
हां! अब इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है कि मैं अपनी शक्तियों का प्रयोग करके...
...तुम्हारे साथ महानगर चला चलूं!
हमको उसी भवन में जाना है, जहां पर मैं विसर्पी को छोड़कर आया हूं!
नागगुरू और नागराज के शरीर हिमालयों पर से गायब होकर—
एक ही पल में महानगर स्थित नागराज के बंगले के अन्दर प्रकट हो गए—
नागराज! आ गए तुम! पर तुम्हारे साथ ये दुष्ट नाग क्यों आया है?
ओह! नागराज के साथ-साथ शीतनाग भी है। नागराज के साथ होने के कारण ही तिलिस्म ने इसे रोका नहीं!
?
दुष्ट 'नहीं' भटक हुआ कहो विसर्पी! वैसे भी मैं इनकी मदद से ही इतनी जल्दी यहां पर आ पाया हूं! यह रहा रक्त रूद्राक्ष, जिसको मणि से स्पर्श कराते ही विसर्पी अपने वास्तविक रूप में आ जाएगी!
यह शुभ कार्य मुझे करने दो नागराज! मैं विसर्पी दीदी को अपने हाथों से रूद्राक्ष छुआकर वास्तविक रूप में लाना चाहती हूं!
और फिर- भारती द्वारा मणि से रक्त रूद्राक्ष का स्पर्श कराते ही—

विसर्पी अपने असली रूप में वापस आ गई—
वाह, दीदी! मैं जानती तो थी कि तुम सुंदर होगी। पर इतनी सुन्दर होगी यह तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी।
मेरा काम हो गया नागगुरू! अब मैं यह 'रक्त-रूद्राक्ष' आपके हवाले करता हूं। अगर अब भी आप लोग अपने ही रास्ते को ठीक समझते हैं तो इसका जैसे चाहे वैसे इस्तेमाल करें।
नहीं नागराज! तुमने मानव नाग होते हुए भी हम दैवीय नागों को मात देकर यह सिद्ध कर दिया है कि कोई भी जाति, दूसरी से श्रेष्ठ होने का दावा नहीं कर सकती!
हम अपनी गलती को स्वीकार करते हुए माफी मांगते हैं!
चलो नागकुमार! अब नागराज के शरीर से विदा लो! और हमारे साथ हिमालय चलो!
नहीं नागगुरू! नागराज जैसे प्राणी के शरीर में रहकर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। मैं अभी और अनुभव प्राप्त करना चाहता हूं। इसीलिए मैं फिलहाल प्रायश्चित करते हुए नागराज के शरीर में ही रहूंगा!
जैसी तुम्हारी इच्छा नागकुमार! हम सब तुम्हारे आने का इंतजार करेंगे! अब हम चलते हैं!
ताकि इस रक्त रूद्राक्ष को उसके उचित स्थान पर पहुंचा सकें!
और फिर-
बस नागराज! नागद्वीप सामने दिख रहा है! तुमको वहां तक जाने की आवश्यकता नहीं है!
अब मैं यहां से तैर कर चली जाऊंगी!
ठीक है विसर्पी! पर तुमने मुझको अब तक यह नहीं बताया कि महात्मा कालदूत मुझे क्यों बुला रहे थे?
वह कोई खास बात नहीं थी नागराज! यहां तक लाने के लिए धन्यवाद!
भारती से मिलने के बाद मैं नागराज से विवाह करने के अपने निर्णय पर दुबारा विचार करने के लिए मजबूर हो गई हूं! भारती का नागराज के प्रति प्यार सच्चा है। वैसे भी अगर नागराज भारती से विवाह करेगा तो कई धर्मसंकटों से बच जाएगा। फिलहाल चुप रहकर इंतजार करना ही होगा। ताकि देखा जा सके कि भविष्य के गर्त में क्या छिपा हुआ है!
समाप्त.